P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-4* ISSUE-7* March- 2017
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सुरेन्द्र वर्मा के कथा–साहित्य का भाषागत विश्लेषण

नीतिका रानी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
पूरनमल रामलाल डिग्री
कालेज, गंगोह, सहारनपुर

सारांश

लेखक द्वारा भाषा अभिव्यंजना और नवीन कला बोध व रोचक शैली के सहारे कथा के शिल्प को नियोजित किया गया है जिससे ये सभी कृतियां अत्यन्त प्रभावशाली बन गई है। रचना प्रक्रिया के सहारे वे अपने कथ्य को हृदय स्पर्शी बनाने में सफल रहें हैं।

मुख्य शब्द : भाषाभिव्यंजना, उपन्यास, शब्दो का प्रयोग, शब्दावली और भाषा

प्रस्तावना

आधुनिक कथा.समीक्षकों के अनुसार भाषा ही कथा शिल्प का प्रमुख आधार है। इसके सहारे लेखक कृति को श्रेष्ठ व पठनीय बना सकता है। उपन्यास के तत्त्वों में भी भाषा.शैली को महत्त्वपूर्ण स्थान मिलता है। डॉ० त्रिभुवन सिंह के अनुसार, ''शैली शिल्प का अंग है और इस प्रकार उपन्यास शिल्प की सार्थकता प्रदान करने में भाषा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।''[1] प्रत्येक साहित्यकार अपनी भाषा का प्रयोग अपने वर्ण्य.विषय के अनुसार करता है। जयदेव तनेजा के अनुसार, ''रचनाकार कभी व्याकरण की कट्टरता से नहीं बंधता बल्कि अपनी दृष्टि से भाषा को संस्कार देता है।''[2] उपन्यासकार अपनी कृति में जिस भाषा का प्रयोग करता है, वह दोहरे अर्थ में महत्त्व रखती है। प्रथमतः तो वह उपन्यासकार के मन में कथा के वैचारिक स्वरूप को व्यक्त करती है, जिसके लिए उसके पास यही एक माध्यम होता है और इसके द्वारा वह उसे पाठकों तक पहुँचाने में समर्थ होता है तथा द्वितीयतः वह अपने उपन्यास में जिन पात्रों की रचना करता है, अपने.अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व में वे भी पृथक सत्ता से युक्त होकर अपने हृदय की विविध अनुभूतियों और भावनाओं की प्रतीति को करा देते हैं।[3] उपन्यास की भाषा में कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं जो उसे जीवन की गंभीरता के अनुरूप बनाते हैं। उपन्यास की भाषा में न कहानी की.सी क्षिप्रता और त्वरित गति होती है और न निबन्ध की.सी शिथिलता, न कविता की.सी भंगिमा और रसमग्नता होती है और न नाटक की.सी वार्तालाप शैली, उपन्यास में ये सभी गुण समन्वित होकर रहते हैं।[4] साथ ही उपन्यास की भाषा में स्पष्टता आवश्यक है बोधगम्य होने की स्थिति में ही पाठक को रसानुभूति हो सकेगी इसीलिए उपन्यास कला के मर्मज्ञ विद्वानों की दृष्टि में अबोधगम्य भाषा का प्रयोग उपन्यासों में पूर्णतः वर्जित है। कृति को सुपाठ्य एवं बोधगम्य बनाने के लिए उपन्यासकार के लिए यह आवश्यक है कि वह ऐसी भाषा का प्रयोग करे जो सर्वसाधारण में लोकप्रिय हो। प्रचलित भाषा के प्रयोग का यह तात्पर्य नहीं कि वह अशुद्ध भाषा हो। भाषा की सर्वमान्यता और उसकी निर्दोषिता उपन्यास को उत्तमता प्रदान करती है।[5] उपन्यास में पात्रानुकूल अनेकविध भाषा.प्रयोग से रोचकता उत्पन्न होती है और वह स्वाभाविक प्रतीत होती है। कथाकार अपनी कथा में वर्गगत विशेषताओं से युक्त पात्र तथा देशकाल, परिस्थितियों और समाज को दृष्टि में रखकर यदि भाषा का प्रयोग करता है तो रचना जन.सामान्य में लोकप्रिय हो सकती है। यह ठीक है कि कथाकार की भाषा का भी अपना स्तर होता है, जिससे वह कथा में अपने दृष्टिकोण को प्रकट करता है। घटनाएँ और पात्र जब विषय को स्पष्ट कर पाने में असमर्थ होने लगते हैं तो उपन्यासकार अपनी स्वयं की टिप्पणियाँ एवं भाषणों द्वारा उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाता है ऐसी स्थिति में उपन्यासकार की स्वयं की भाषा भी मूल्यांकन की अपेक्षा रखती है इस प्रकार अन्य साहित्य रूपों की अपेक्षा उपन्यास की भाषा का विवेचन करना कठिन कार्य है।[6]

भाषा के सहारे कथाकार कथा.शिल्प को भी नियोजित करता है। अतएव किसी भी औपन्यासिक कृति अथवा कहानियों के लिए भाषा आवश्यक है। भाषा की अभिव्यंजना शक्ति रचना विधान का सशक्त मानदण्ड है कथाकार की भाषा की सफलता उसका सही और उचित प्रयोग है। भाषा में कलानुसरण की

क्षमता का होना भी आवश्यक है वह तथ्य और अनुभूति, बाह्य और आंतरिक यथार्थ दोनों को ही अभिव्यक्त करती है अतएव उसमें कथाकार अपेक्षित गहराई और विविधता भरकर नवीन क्षमता के साथ अधिक व्यापक बनाता चलता है। पिछले दशक के यशस्वी लेखक सुरेन्द्र वर्मा ऐसे ही उपन्यासकार हैं, जिनकी भाषा उनकी वस्तु को सुरम्य आकार देने में समर्थ है। उन्होंने शब्दों, मुहावरों उक्तियों में नयी अर्थ क्षमता भर कर रचना शिल्प.विधान को नये आयाम दिए हैं।

उददेश्य

साहित्य का समाज का प्रत्यक्ष दृष्टया होता है।वह जिस रुप में समाज को देखता है उसकी सरल व सीधी अभिव्यक्ति शब्दो व भाषा के माध्यम से अपनी रचना में व्यक्त करता है। कथा शिल्प को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिये साहित्यकार को एक सशक्त भाषा की आवश्यकता होती है।जो सभी विशेषताओं व गुणो से परिपूर्ण होती है, वहीं भाषा रचना को त्वरित गति प्रदान करती है। वर्मा जी के साहित्य में यही अभिव्यक्ति अलग–अलग रुपो से दृष्टिगोचर होती है। जिसके माध्यम से पाठक वर्ग जिज्ञासा, रुचि व प्रसन्ता का अनुभव करते दिखाई देते है।

सुरेन्द्र वर्मा की भाषा का विश्लेषण

रूप व्यवहार की दृष्टि से अपने कथा.साहित्य में वर्मा जी ने व्याकरण सम्मत परिमार्जित भाषा का प्रयोग किया है। जन.सामान्य के लिए उन्होंने सामान्य भाषा तथा अभिजात्य वर्ग के लिए अंग्रेजी, संस्कृत के तत्सम शब्दों से युक्त परिनिष्ठित भाषा प्रयुक्त की है। जन.साधारण दैनिक जीवन में प्रायः सरल एवं प्रचलित शब्दावली का व्यवहार करता है। ग्रामीण परिवेश से आए व्यक्ति में क्षेत्रीय बोलियों का, मुस्लिम वर्ग में उर्दू– अरबी.फारसी शब्दों का तथा वर्ग विशेष में अशिष्ट व अश्लील शब्दावली का प्रयोग पात्रों की बौद्धिक क्षमता तथा मानसिक अवस्था के अनुरूप ही कथा में किया गया है।

(क) तत्सम शब्दावली का आग्रह

हिन्दी भाषा में प्रकृति के अनुरूप वर्मा जी के कथा.साहित्य में संस्कृत की तत्सम शब्दावली के प्रति सतत मोह दृष्टिगोचर होता है किंतु लेखक दुर्वह शब्दावली से यथासंभव बच गया है इसीलिए अस्वाभाविकता के दोष से ऐसी वाक्य रचना मुक्त है। 'अँधेरे से परे', 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' तथा प्रायः सभी कहानियों में तत्सम शब्दों की अधिकता है जबकि 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में संस्कृतनिष्ठ भाषा का व्यवहारिक रूप ही अधिक दृष्टिगोचर होता है। कुछ उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं, ''जैसे भौंरों की पाँते वसंत के ढेरों फूल छोड़कर आम्र.मंजरियों पर ही जा मंडराती है, वैसे ही अनेक संतानों के होते हुए भी हिमवान की आँखें पार्वती पर ही अटकी रहती थीं।''[7] 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में तत्सम शब्दावली के प्रयोग के साथ सामान्य बोल.चाल के शब्द भी आए हैं, ''तात अब तो ज्ञान.दान के साथ.साथ मेरे रोएँ.रोएँ में आपका नमक भी बस गया है।''[8]

(ख) सामान्य भाषा का प्रयोग

प्रसंगानुसार वर्मा जी ने सामान्य जीवन की दैनिक व्यवहार की बोल चाल की भाषा का भी अनेकविध प्रयोग किया है, ''शिकोहाबाद की मुंगेरी देवी को अपने चिरंजीव दीनदयाल उपाध्याय के लिए दो साल से 'सुंदर, सुशील और सात्विक' कन्या की तलाश थी। अपना दुमंजिला पक्का मकान था। पिता के निधन के बाद दीनदयाल अपनी बिजली के सामान की दुकान पर बैठता था। आवागमन के लिए स्कूटर था उसके पास। मुंगेरी देवी यहाँ अपने ममेरे भाई के पास कन्या अवलोकन के लिए आयी थीं। वह तीन नमूनों का परीक्षण कर चुकी थीं, जो खोटे साबित हुए थे। गायत्री को देखते ही उनकी त्रिगुणशीलता की कसौटी झंकृत होने लगी थी (''उसके चेहरे पर राम जी की गाय प्रसंगानुसार वर्मा जी ने सामान्य जीवन की दैनिक व्यवहार की बोल चाल की भाषा का भी अनेकविध प्रयोग किया है, ''शिकोहाबाद की मुंगेरी देवी को अपने चिरंजीव दीनदयाल उपाध्याय के लिए दो साल से 'सुंदर, सुशील और सात्विक' कन्या की तलाश थी। अपना दुमंजिला पक्का मकान था। पिता के निधन के बाद दीनदयाल अपनी बिजली के सामान की दुकान पर बैठता था। आवागमन के लिए स्कूटर था उसके पास। मुंगेरी देवी यहाँ अपने ममेरे भाई के पास कन्या अवलोकन के लिए आयी थीं। वह तीन नमूनों का परीक्षण कर चुकी थीं, जो खोटे साबित हुए थे। गायत्री को देखते ही उनकी त्रिगुणशीलता की कसौटी झंकृत होने लगी थी (''उसके चेहरे पर राम जी की गाय .जैसा भाव था!'')[9] 'सहारा' कहानी में सामान्य भाषा का प्रयोग वर्मा जी ने चिन्तामणि के माध्यम से किया है। वर्मा जी ने संपन्न वर्ग के साथ.साथ मध्यम वर्ग को भी लिया है, जिसमें प्रचलित भाषा साधारण भाषा है।

(ग) अंग्रेजी भाषा का प्रयोग

पढ़े लिखे, संभ्रांत, उच्चवर्ग के व्यक्ति प्रायः अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं। वे इसे अपनी प्रतिष्ठा के साथ जोड़ते हैं। संपन्न वर्ग जो प्रायः अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करता है यदि हिन्दी भाषा का प्रयोग भी करता है तो वह शुद्ध रूप में नहीं वरन् हिन्दी.अंग्रेजी मिश्रित रूप में होती है। सुरेन्द्र वर्मा ने अपने साहित्य में महानगरीय परिवेश के मध्यम व उच्च वर्ग को ही बहुलता के साथ स्थान दिया है, जिस कारण उनके पात्र हिन्दी.अंग्रेजी मिश्रित भाषा का प्रयोग करते हैं। कहीं.कहीं तो पूरा का पूरा वाक्य ही अंग्रेजी में कहा गया है, ''वर्षा ने ट्रेंनिग के बाद निखार पायी हुई अपनी संतुलित आवाज में कहा,'' ''इट्स ए न्यू प्ले वैरी रीसेंटली ब्रॉट आउट बाइ ए न्यूयॉर्क पब्लिशिंग हाउस। टु द बेस्ट ऑफ माई नौलेज़, अवर्स वाज़ द फर्स्ट प्रोडक्शन इन एशिया। इट्स ऐ वैरी सेंसिटिव, पेंसिव डिसैक्शन ऑफ इंडवीडुएल फ्रीडम वर्सेज़ स्टेट स्ट्रोग होल्ड। इट वैरी ब्यूटीफुली पोर्ट्रेज़ द रिलेशनशिप बिटवीन ऐ हस्बेंड एंड वाइफ इन ए क्लोज्ड सोसायटी एंड टु व्हाट एक्सटेंट द सिस्टम कैन डैमेज़ एन इंडवीडुएल। आई डिड द हीरोइन शान्या। इट वाज़ ऐ वेरी सेंसिटिव, वेरी टेंडर कैरेक्टर, ऑलवेज़ ऑन द ऐज ,एंड ,ग्रेजुएली फाल्स एपार्ट। आइ विल ऑलेवज़ रिमैम्बर शान्या, बिकाज़ इट'स शी, हू गेव मी माइ फर्स्ट वैलिड

आइडेंटिटी एज़ एन एक्ट्रैस इन न्यू डेल्ही, व्हैन आइ माइसैल्फ वाज़ फालिंग एपार्ट...''[10]

'प्यार की बातें तथा अन्य कहानियाँ' में 'कॉमिक' कहानी में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बहुलता के साथ किया गया है, ''दिस इज़ लाइफ, ब्यॉय!...टेक इट ईजी!गग ''ह्व ऽ ऽ ट.... .....डु यू मी ऽ ऽ न ? टेक इट ईजी, ब्यॉय...टेक इट ईजी। गगग शी इज़ माई सिस्टर।''[11] अंग्रेजी भाषा प्रयोग वर्मा जी ने बहुतायत से किया है। 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में हिन्दी.मिश्रित अंग्रेजी का रूप देखने को मिलता है। ''एक्चुअली इट वाज़ माइ वाइफ, हू हैज़ फर्स्ट सीन दैट आर्टीकिल इन 'इंडिया टुडे'। भार्गव बोले, ''ए कैप्शन इन योर फोटो सेड, वर्षा वशिष्ठ फ्रॉम शाहजहाँपुर। दैन आइ आस्क्ड मिस्टर चोपड़ा...उन्होंने सामने के एक व्यक्ति की ओर संकेत किया और मुस्कराये, ''ही टोल्ड मी कि सर, शी इज मिस्टर शर्माज़ सिस्टर।''[12] उपर्युक्त उदाहरणों के आधार पर कह सकते हैं कि वर्मा जी ने अपने साहित्य में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बहुलता के साथ किया है। हिन्दी और अंग्रेजी का मिला.जुला रूप तो प्रायः सभी उपन्यासों और कहानियों में मिलता है।

(घ) उर्दू भाषा का प्रयोग

वर्मा जी ने अपने कथा.साहित्य में उर्दू शब्दों का प्रयोग भी बहुतायत से किया है। अरबी.फारसी के शब्दों की संख्या बहुत ज़्यादा उनके साहित्य में देखने को मिलती है किन्तु भाषा के इस मिले.जुले रूप से साहित्य में दोष उत्पन्न होने के बजाय उसका रूप निखर जाता है, जिससे उसमें चार चाँद लग जाते हैं। 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में वर्मा जी ने लगभग आधे से ज़्यादा पात्र मुस्लिम वर्ग से लिए है इस कारण अरबी.फारसी के शब्दों का प्रयोग बहुलता के साथ हुआ है। 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में, ''करार नहीं...आज मेरे दिल को करार नहीं...आज सुबह से ही क्यों मेरा दिल लरज़ रहा है।गगग ''नहीं...मेरी नज़रों को क्या हो गया है आज...ताजमहल मुझे सुफेद दिखायी नहीं दे रहा। संगेमरमर की कबूतर के परों जैसे आब पर ख़ून के छीटें हैं...दूर उफक पर अम्मी हुजूर ने आहो.फूगां से थकी पलकें बंद की हैं और दर्दो. ग़म के कतरे टप.टप करके नीचे गिर रहे हैं...।''[13] 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में ''जलवे तेरे गुलशन गुलशन सतवत तेरी सहरा.सहरा। रहमत तेरी दरिया दरिया सुबहहानल्लाह सुबहानल्लाह..., ''मैं ब्लासम की तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ।''[14]

(ड) लोकभाषा या ग्रामीण शब्दावली

ग्राम्य भाषा के अंतर्गत भाषा का वह स्वरूप रखा जा सकता है, जिसका संबंध विशेष रूप से ग्रामीण प्रदेशों या कस्बों से होता है। ग्रामीण प्रदेश के नागरिक अशिक्षित होते है और उच्चवर्ग की भाषा से इनकी भाषा में भेद होता है। 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास के प्रथम खण्ड की कथा जो कि शाहजहाँपुर के सुल्तान गंज की है उसमें कहीं.कहीं ग्राम्य भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए– काहे, साच्छात, दुरमुट, तू.तड़ाक, कुलच्छिनी, कुजात, ठुसायेगी, नासपीटी, टेंटुवा, खरहरी, गुइया इत्यादि। इसी प्रकार 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में भी कुछ ग्रामीण शब्दों का प्रयोग मिलता है। जैसे–काका, आठ दर्जा, तनख़ा, टुकर.टुकर, करम, देस इत्यादि।

(च) ब्रजभाषा के शब्दो का प्रयोग

वर्मा जी ने 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में मथुरा से भोला का संबंध चित्रित किया है, जिस कारण उनके साहित्य में कुछ शब्द ब्रजभाषा के पाये गये हैं जैसे –विला गए, भौजाई, पठायी, काहू आदि।

(छ) अश्लील शब्दावली का प्रयोग

वर्मा जी ने भाषा का प्रयोग परिस्थितियों के अनुसार किया है। उन्होंने पात्रों के अनुकूल भाषा को महत्त्व दिया है, चाहे वह कितनी ही अश्लील क्यों न हो।'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में उन्होंने अपराधी वर्ग का भी चित्रण किया है, जिनके लिए गाली देना, अश्लील बातें करना साधारण बात है। उदाहरण देखिए – ''तेरी माँ की?''[15] ''मुलायम ज़िंदगी के लिए तुम खुशी.खुशी रंडी बनने को तैयार हो।''**गगग** ''तुम इस शहर में बाप के नाम के बिना सौ रुपया कमाकर दिखाओ, तो तुम्हारा गू निकल आएगा।''[16] इस उपन्यास में वर्मा जी ने बहुत ही अश्लील शब्दावली का प्रयोग किया जिसका खुला वर्णन नहीं किया जा सकता।

(ज) हास्य व्यंग्य

वर्मा जी का भाषा प्रयोग वैविध्यपूर्ण किया है वैसे भी पात्रों के अनुकूल भाषा का चयन ही कृति को श्रेष्ठ बना सकता है। वर्मा जी ने अपने कथा.साहित्य में व्यंग्यात्मक वाक्यों को भी उदारता से अपनाया है, जिस कारण पात्र हँसी के पात्र बन जाते हैं। पुष्शया कहानी में ब्रज का चित्रण इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।

(झ) अन्य विशेषतायें

दृष्टिकोण से जो शब्द योजना उपयुक्त मानी जा सकती है वर्मा जी उसी शब्दावली को महत्त्व देते हैं। इस दृष्टि से उनकी भाषा में दो विशेषताएँ विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। वे है **स्वच्छंदता और भावानुकूलता**। वर्मा जी भाषा के प्रयोग में किसी बंधन में नहीं बंधे उन्होंने उसका प्रयोग पूरी स्वच्छंदता के साथ किया है। भावों के अनुकूल और प्रसंगों के अनुकूल ही वे भाषा का प्रयोग करते हैं। संदर्भ और पात्रों के दृष्टिकोण से जो शब्द योजना उपयुक्त मानी जा सकती है वर्मा जी उसी शब्दावली को महत्त्व देते हैं। इस दृष्टि से उनकी भाषा में दो विशेषताएँ विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती हैं। वे है **स्वच्छंदता और भावानुकूलता**। वर्मा जी भाषा के प्रयोग में किसी बंधन में नहीं बंधे उन्होंने उसका प्रयोग पूरी स्वच्छंदता के साथ किया है। भावों के अनुकूल और प्रसंगों के अनुकूल ही वे भाषा का प्रयोग करते हैं। संदर्भ और मनोदशा के अनुसार भाषा में अनेकरूपता मिलती है जैसे– 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में नील की भाषा श्रीमती मेहताब दस्तूर के साथ सामान्य व साधारण होती है। वहीं पारुल की बेवफाई के बाद उसके लिए वह जुगुप्सामूलक अश्लील शब्दावली का प्रयोग करता है।[17] वर्मा जी ने भाषा के अंतर्गत काम.संबंधों का चित्रण बहुत सफलता के साथ किया है, जिसमें उन्होंने नाटकीय संवेदनाओं को लिया है। हर्ष और वर्षा का प्रसंग।[18]

गुल्लू.मधु का प्रंसग।[19] कहानी संग्रह 'प्यार की बातें तथा अन्य कहानियाँ' में भी काम.संबंधों को चित्रित करने के लिए काम.संबंध की संवेदनाओं का चित्रण किया है। शयन.कक्षके क्रिया. कलापों और तत्संबंधी जिज्ञासाओं को चित्रित करने के लिए वे ऐसा जाल बुनते हैं कि उनकी भाषा रोमानी रंगत से ओत.प्रोत दिखाई देती है। काम. संबंधों के कमनीय उदात्त चित्रण सुरेन्द्र वर्मा के साहित्य में प्रदर्शित होते हैं।

भाषा की दृष्टि से सुरेन्द्र वर्मा ने भाव चित्रों को उकेरने के लिए काम.क्रीड़ा को लिया है। फ्रायड आदि के मनोविज्ञान से इनकी पुष्टि करते हैं, जो अवदमित वासनाएँ फ्रायड के मनोविश्लेषण में मिलती हैं वही वर्मा साहित्य में किसी.न.किसी स्तर पर उपलब्ध हैं। चाहे लेखक हो या कवि सभी का माध्यम भाषा और भाषा की प्रकृति होती है कि वह लगातार घिसती चलती है इसीलिए सुरेन्द्र वर्मा अपने साहित्य में अपनी भाषा को निरंतर साधते और कसते आए हैं। साहित्यकार सुरेन्द्र वर्मा सफल नाटक लिखने के कारण नाटककार के रूप में अधिक चर्चित हैं इसलिए उनकी भाषा में **नाटकीयता का पुट** भी स्वाभाविक रूप से अधिक मिलता है, साहित्य के क्षेत्र में हलचल मचाने वाले सुरेन्द्र वर्मा की भाषा में **लय, छंद, भाव और कवित्त** की प्रधान विशेषताएँ हैं। मूलरूप से नाटककार होने के कारण उनकी भाषा में संगीत के आरोह.अवरोह, उतार.चढ़ाव और ध्वनियों के बलाघात मिलते हैं। उन्होंने कथा.साहित्य में बलाघात का प्रयोग किया है। जैसे– 'वेऽऽट ऽऽ र ऽऽऽ टेबिल नम्बर छह पर पुकार लगती है।''[20]

शब्द–सम्पदा

भाषा के उपरिनिर्दिष्ट रूपों पर विचार करने के उपरांत यह कहा जा सकता है कि उनके कथा.साहित्य में तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी, अंग्रेजी और फारसी के शब्दों का भाषा के उपरिनिर्दिष्ट रूपों पर विचार करने के उपरांत यह कहा जा सकता है कि उनके कथा.साहित्य में तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी, अंग्रेजी और फारसी के शब्दों का बाहुल्य है, जो उनके शब्द ज्ञान का सशक्त प्रमाण देता है। विदेशी शब्दों का स्वच्छंदता पूर्ण प्रयोग इस तथ्य को भी प्रकाशित करता है कि भाषा प्रयोग में उनकी दृष्टि उदार व असांप्रदायिक है। भाषा प्रवाह के लिए जो भी शब्द उचित जान पड़े, उन्हें वार्तालाप में प्रयुक्त करने में उन्हें कोई संकोच नहीं हुआ। अपना निजी चिंतन वे अवश्य परिनिष्ठित हिन्दी में ही व्यक्त करते रहे हैं किंतु पात्रों के लिए संस्कृत के अपभ्रष्ट रूप भी प्रयुक्त कर देते हैं। कदाचित् वहाँ भाषा प्रयोग में पात्र और प्रसंग उनके लिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है। 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' में गाँव से आया हुआ अशिक्षित भोला बम्बई में आकर अंग्रेजी शब्दों के इसी अपभ्रष्ट रूप का प्रयोग करते हुए देखा जा सकता है। लोक वार्ता में समादृत देशज शब्दों का प्रयोग भी वर्मा जी ने बहुलता के साथ किया है। ये प्रायः अज्ञातव्युत्पत्तिमूलक हैं जैसे – पेड़ों, धब्बे, टीस, झगड़ा, टंटा आदि। वर्मा जी ने कुछ शब्दों का प्रयोग कृतियों में बार.बार किया है जैसे – नीम अँधेरा, मेहँदी की बाड़, पेड़ या झाड़, 54 सुल्तान गंज आदि।

विदेशी शब्दावली

लेखक ने रचनाओं में अंग्रेजी, उर्दू, तुर्की, अरबी. फारसी, पश्तो, पुर्तगाली, जापानी, आदि का स्वच्छंद प्रयोग किया है। अंग्रेजी और उर्दू के तो सैकड़ों शब्द आ गए हैं, जो इस तथ्य के पुष्ट प्रमाण है कि लेखक की भाषा विषयक दृष्टि पर्याप्त लचीली साथ ही कथाओं का परिवेश वर्तमान दशक का होने के कारण जन समाज में प्रचलित ऐसी शब्दावली का प्रयोग स्वाभाविक ही कहा जायेगा।

शब्द शक्तियां

शब्द की अर्थ सामर्थ्य को प्रकट करने की क्षमता ही शब्द शक्ति है। आचार्यों ने इस शब्द के अर्थ बोधक व्यापार हेतु को ही शब्द की शक्ति मानते हुए इसके तीन भेद–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना स्वीकार किये हैं। वर्मा जी की कहानियाँ और उपन्यासों में वर्णनात्मकता और स्पष्टता का गुण अधिक मिलता है अतएव ऐसे स्थलों पर अभिधा शब्द शक्ति के दर्शन स्वाभाविक रूप से हो जाते हैं इसी के साथ.साथ ऐसे स्थलों की कमी नहीं है, जहाँ उन्होंने लाक्षणिक शब्दावली द्वारा मुख्यार्थ के साथ अन्य अर्थ का आरोप भी कर दिया है साथ ही कहीं.कहीं अलंकारिक वर्णनों में प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों को ही ग्रहण कर लिया है ऐसे प्रसंगों में लक्षणा शब्द शक्ति मिलती है। इसी के साथ जहाँ पात्रों के वार्तालाप में देशकाल परिस्थिति के अनुसार सामान्य से परे या अन्य अर्थ का बोध कराने के उद्देश्य से कथन को शब्द की अर्थ सामर्थ्य को प्रकट करने की क्षमता ही शब्द शक्ति है। आचार्यों ने इस शब्द के अर्थ बोधक व्यापार हेतु को ही शब्द की शक्ति मानते हुए इसके तीन भेद–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना स्वीकार किये हैं। वर्मा जी की कहानियाँ और उपन्यासों में वर्णनात्मकता और स्पष्टता का गुण अधिक मिलता है अतएव ऐसे स्थलों पर अभिधा शब्द शक्ति के दर्शन स्वाभाविक रूप से हो जाते हैं इसी के साथ.साथ ऐसे स्थलों की कमी नहीं है, जहाँ उन्होंने लाक्षणिक शब्दावली द्वारा मुख्यार्थ के साथ अन्य अर्थ का आरोप भी कर दिया है साथ ही कहीं.कहीं अलंकारिक वर्णनों में प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों को ही ग्रहण कर लिया है ऐसे प्रसंगों में लक्षणा शब्द शक्ति मिलती है। इसी के साथ जहाँ पात्रों के वार्तालाप में देशकाल परिस्थिति के अनुसार सामान्य से परे या अन्य अर्थ का बोध कराने के उद्देश्य से कथन को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए व्यंजना शक्ति का सहारा लिया है या फिर कहीं लक्ष्यार्थ से भी व्यंग्यार्थ की प्रतीति कराकर व्यंजना का चमत्कार दिखलाया है। इन तीनों भेदों में यों तो वाच्यार्थ ही अधिक उभरकर सामने आया है किंतु शेष भेदों के प्रयोग से भाषा में रोचकता और अर्थगत चमत्कार उत्पन्न हो गया है यद्यपि ऐसे वर्णन प्रसंग तुलनात्मक रूप से अधिक नहीं हैं।

वाक्य संरचना और दोष

वर्मा जी की शब्द शक्ति की विवेचना के बाद उनकी वाक्य.रचना पर विचार भाषा की दृष्टि से आवश्यक है। वाक्य भाषा का अनिवार्य धर्म है। इस दृष्टि से वर्मा जी की भाषा सुनिश्चित और पुष्ट है। उनके गद्य.साहित्य में सुडौल वाक्य.रचना मिलती है परंतु कहीं.कहीं स्थानों पर बिना क्रिया के वाक्य मिलेंगे जैसे– ''मानती

हूँ''[21] ''कौन ऐसा सूत्र छूट गया है, जिससे बात खुल सकती है।''[22] ''मैं बारह तक आता हूँ''[23]

वर्मा जी के कथा साहित्य की भाषागत उपलब्धियां

वर्मा जी ने शब्द अथवा अर्थ गुण के सहारे अपने गद्य को कहीं.कहीं लालित्य से परिपूर्ण बना दिया है। कथा को विविध रूपों में व्यक्त करने के कारण भाषा में अंलकारिकता भी आ गई है। इसी प्रकार अर्थ कौशल और शब्द लाघव से उक्तियों में वैचित्र्य उत्पन्न हो गया है। अनेक उपमानों की सहायता से लेखक ने वर्णन को रमणीयता प्रदान की वर्मा जी ने शब्द अथवा अर्थ गुण के सहारे अपने गद्य को कहीं.कहीं लालित्य से परिपूर्ण बना दिया है। कथा को विविध रूपों में व्यक्त करने के कारण भाषा में अंलकारिकता भी आ गई है। इसी प्रकार अर्थ कौशल और शब्द लाघव से उक्तियों में वैचित्र्य उत्पन्न हो गया है। अनेक उपमानों की सहायता से लेखक ने वर्णन को रमणीयता प्रदान की है साथ ही 'मुहावरों' के अत्यधिक प्रयोग से भाषागत उपलब्धियों का निरूपण किया जा रहा है।

(क) गुणो के प्रयोग से काव्यात्मकता

सुरेन्द्र वर्मा कवि ह्रदय लेखक रहे हैं। काव्य सृजन में भी उनकी रुचि रही है इसलिए भावना के आवेग में उनकी कथाओं में कहीं.कहीं काव्यमयी भाषा के दर्शन हो जाते हैं। ऐसे ही गद्यांश अथवा उक्तियाँ रस के उत्कर्ष में सहायक रहती हैं। वर्मा जी कथा में वर्णन.प्रसंगों को प्रसाद गुण के प्रयोग से बोधगम्य बनाकर पाठक को आजादित करते हैं –

'प्यारी.प्यारी कितनी तुम्हारी मुद्राएँ प्रिये,
सौम्यमुद्रा, पोर.पोर मेरे मनमोर हो।।
आय रंगमंच पै चुराये लियो मेरो चैन,
चित्त झकझोर, ओ सलोने चितचोर हो।।
जहाँ.जहाँ देखूँ वहाँ दीख पड़े तेरी छवि,
सूरजमुखी रवी की, चाँद के चकोर हो।
मिश्रीलाल कॉलेज के प्रांगण में विद्युत्लता,
शाहजहाँ पुर के हिरदय की हिलोर हो।[24]

(ख) अलंकारिकता

सुरेन्द्र वर्मा की अनुभूति प्रवणता वचन वक्रता से प्रेरित होकर भाषा.धारा में जो आवर्त उत्पन्न करती है वे ही उनकी भाषा के सौंदर्य विधायी तत्त्व अलंकार बन जाते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में विविध वर्णन प्रणालियों के प्रयोगों में अलंकारों का प्रयोग करके भाषा में सौंदर्य उत्पन्न कर दिया है। अलंकारों का यह प्रयोग उनकी भाषा में सहज रूप से ही मिलता है, जो वर्मा जी की भावुकता के सुंदर उदाहरण हैं। सामान्यतया एक ही कथ्य को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करने के लिए वर्मा जी ने अलंकारों का प्रयोग किया है।

(ग) उपमानो का अंतरंग प्रयोग

वर्मा जी ने अपने साहित्य में सभी स्थानों से उपमान ग्रहण किये हैं जैसे– 'भीगे कम्बल.सा', 'कपड़ों के नीचे त्वचा पर जैसे गर्द की एक परत और चढ़ गई हो। बालों में कीड़े जैसे रेंगते हुए'।

(घ) उक्ति वैचित्र्य और सूक्तियां

लेखक की कथन भंगिमा जब चमत्कार पूर्ण ढंग से रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने लगती है तो उक्ति वैचित्र्य कहलाती है। इसी प्रकार परम्परा से संचित लोकानुभव या फिर लेखक के निजी अनुभव जब ललित शब्दों में बंधकर भाषा की सामासिकता के साथ उसके द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं तो वे सूक्तियाँ कहलाती हैं। वर्मा जी के कथा.साहित्य में प्रतिबिम्बित उक्तियाँ अपनी भाव.भंगिमाओं के कारण पाठक के मन को चमत्कृत करके उसे रसानुभूति कराने के उदाहरण बहुलता के साथ आए हैं जैसे–'लड़की की लाज मिट्टी का सकोरा होती है,' 'बरसाती बावड़ी गंगा की ओर देखेगी तो मलिन ही होगी,' 'छप्पर की लकड़ी की पहचान भादों में होती है,' 'गंगू तेली के घर राजा भोज पधारे हैं,'[25]

(ङ) भाषाई लोकचेतना

महानगर की अभिजात्य संस्कृति और परिवेश में निमग्न कथा लेखक वर्मा जी जन.सामान्य से भी उतनी ही गहराई से जुड़े हैं। उनकी रचनाओं में आई लोकोक्तियाँ और मुहावरे इस तथ्य का सशक्त प्रमाण है। उनकी कथाओं में उनके अनेकविध प्रयोग लोक.चेतना के प्रति उनकी गहरी दृष्टि के भी सूचक हैं। वे एक ओर अपनी भाषा को परिष्कृत और प्रसाद गुण से युक्त बनाने के लिए प्रयत्न शील हैं तो दूसरी ओर देशज शब्द, तथा पश्चिमी हिंदी की ग्रामीण बोलियों के और इसी के साथ लोकवाणी की अंतर्निहित शक्ति को पहचान कर मुहावरों व कहावतों के माध्यम से भाषा में उसके प्रयोग उनकी लोक .चेतना के परिचायक हैं।

(च) रचना शैली

सुरेन्द्र वर्मा ने अपने साहित्य में पाँच प्रकार की शैलियों– वर्णनात्मक शैली, तुलनात्मक शैली, विचारात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली तथा मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग किया है। मुख्यतया वर्णनात्मक शैली की ही प्रधानता है। उन्होंने अपने साहित्य में प्रकृति.चित्रण का वर्णन, महानगरों की व्यस्त ज़िंदगी और भीड़.भाड़ का करने के लिए वर्णनात्मक शैली को ही अपनाया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षता से कह सकते है कि भाषा और शिल्प के सहारे वर्मा जी ने अपनी रचनाओं में जिस प्रभाव की सृष्टि की है, उसमे उनकी भाषा का महत्वपूर्ण योग रहा है। उनकी भाषा उपन्यास वर्णन शैली की अपेक्षा रंगमंच से अधिक अनुकूल है। संस्कृत के क्लासिकल साहित्य विशेष रुप से कालीदास से प्रभावित होने के कारण लेखक की रुचि तत्सम शब्दावली की ओर अधिक रही है। किन्तु उनकी रचनाओ में पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग का भी अपना महत्व है।आवश्यकतानुसार उर्दू शब्दावली तथा आभिजात्य वर्ग के वार्तालाप में अंग्रेजी शब्दो तथा वाक्यो का प्रयोग भी उदारता से किया है। प्रतीत होता है लेखक का संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी पर समान अधिकार है। तत्सम शब्दावली के साथ–साथ उर्दू की रवानगी कथाकार की भाषा–सहिष्णुता की द्योतक है।

पाद टिप्पणी

1. *हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग, डॉ० त्रिभुवन सिंह, पृ० –394*
2. *आज की हिन्दी नटरंग नाटक, जयदेव तनेजा पृ० 151*
3. *हिन्दी उपन्यास कला, डॉ० प्रतापनारायण टंडन, पृ० 253.254*
4. *हिन्दी उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा, डॉ० मक्खन लाल शर्मा, पृ० 98*
5. *हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग, डॉ० त्रिभुवन सिंह, पृ० 397*
6. *वही, पृ०– 397*
7. *मुझे चाँद चाहिए, पृ०– 23*
8. *दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृ०– 85*
9. *मुझे चाँद चाहिए, पृ०– 25.26*
10. *मुझे चाँद चाहिए, पृ० –179*
11. *प्यार की बातें तथा अन्य कहानियाँ, पृ०–13*
12. *मुझे चाँद चाहिए, पृ० –178*
13. *वही, –पृ० –51*
14. *दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृ०–53, 85*
15. *वही, पृ०–65*
16. *वही, पृ०–203*
17. *दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृ०–23, 24, 25 और 240*
18. *वही, पृ०–114, 119–120, 530*
19. *अँधेरे से परे पृ०–88, 94 से 98 तक*
20. *प्यार की बातें तथा अन्य कहानियाँ, पृ०–70*
21. *वही, पृ०–335*
22. *प्यार की बातें तथा अन्य कहानियाँ, पृ०–62*
23. *दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, पृ०–78*
24. *मुझे चाँद चाहिए पृ०–42*
25. *मुझे चाँद चाहिए, पृ०– 32,34,200,150*